नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक :31-12-2019

प्रकाशनार्थ

(भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार पर देश भर के विद्वान करेंगे मंथन)

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित तथा नेपाल शोध अध्ययन केन्द्र, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर एवं भारतीय इतिहास संकलन समिति; गोरक्षप्रांत के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार विषय पर युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 03 एवं 04 जनवरी 2020 को किया जा रहा है। संगोष्ठी में देश–विदेश से आ रहे विद्वान दो दिनो तक भारतीय संस्कृति के विविध पक्षो सहित उसके वैश्विक प्रसार पर गहन मंथन करेंगे। संगोष्ठी का उद्घाटन 03 जनवरी को प्रातः 09 बजे 20 मिनट पर होगा। उद्घाटन अवसर पर **विश्व बुद्धिष्ट मिशन के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मेधांकर रवि** मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। **मुख्य वक्ता** के रूप में **अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना** के संगठन मंत्री **डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय** का सानिध्य रहेगा। साथ ही साथ दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के विभागाध्यक्ष **प्रो. शीतला प्रसाद सिंह** बतौर **विशिष्ट अतिथि** के रूप में उपस्थित होंगे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रांत के पूर्व अध्यक्ष **डॉ. महेश कुमार शरण** करेंगे।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बताया कि दो दिनों तक चलने वाली इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुल चार तकनीकी सत्र चलेंगे साथ ही एक मुक्त परिचर्चा सत्र का भी आयोजन किया जाएगा। प्रथम तकनीकी सत्र में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के इतिहास विभाग के अध्यक्ष **प्रो. मुकुन्द शरण त्रिपाठी** अध्यक्ष जबकि प्राचीन इतिहास विभाग के आचार्य **डॉ. रामप्यारे मिश्र** सह–अध्यक्ष होंगे और नव नालन्दा महाविहार, के प्राचीन इतिहास विभाग के अतिथि व्याख्याता **प्रो. प्रेमशंकर श्रीवास्तव** विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित रहेगे। यह सत्र प्रातः 11 बजे से 01 बजे तक चलेगा। पुनः 02 बजे से 04 बजे तक द्वितीय तकनीकी सत्र का आयोजन किया जायेगा। जिसमें अध्यक्ष के रूप में सन्त तुलसीदास पी.जी. कालेज, कादीपुर सुल्तानपुर के संस्कृत विभाग के सेवानिवृत्त आचार्य **डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय** उपस्थित रहेंगे। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के **प्रो. दिग्विजयनाथ मौर्य** सह–अध्यक्ष एवं विषय–विशेषज्ञ के रूप में माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश के सहायक सचिव **डॉ. प्रकास कुमार झा** जी होंगे। तत्पश्चात संगोष्ठी के दूसरे दिन 04 जनवरी को प्रातः

09:40 से मुक्त परिचर्चा सत्र का आयोजन किया जाएगा जिसकी अध्यक्षता भारतीय इतिहास संकलन समिति गोरक्षप्रांत के अध्यक्ष प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी करेंगे। इस मुक्त परिचर्चा सत्र में विषय विशेषज्ञ के तौर **पर प्रो. निधि चतुर्वेदी, प्रो. प्रेम शंकर श्रीवास्तव, प्रो. कमलेश कुमार गौतम प्रो. विजय शंकर श्रीवास्तव, डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डॉ. प्रभास कुमार झा, डॉ. राजेश नायक, डॉ. राकेश कुमार सिन्हा, डॉ. मनोज तिवारी, डॉ. रविन्द्र आनन्द, डॉ. अम्बिका तिवारी, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. त्रिभुवननाथ त्रिपाठी, डॉ. मणीन्द्र यादव, डॉ. श्वेता, डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी** उपस्थित होंगे। तत्पश्चात् 11 बजे से तृतीय एवं चतुर्थ तकनीकी सत्र समानान्तर सत्र में आयोजित किया जायेगा। तृतीय सत्र की अध्यक्षता की दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के आचार्य **प्रो. राजवन्त राव** करेंगे जबकि सह–अध्यक्ष प्रो. प्रज्ञा चतुर्वेदी होंगी। विषय विशेषज्ञ के रूप **में काशी प्रसाद जायसवाल** शोध संस्थान पटना के शोध अन्वेषक **डॉ. राकेश कुमार सिन्हा** होंगे। चतुर्थ तकनीकी सत्र में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राचीन इतिहास विभाग की सेवानिवृत्त आचार्य **प्रो. विपुला दुबे** अध्यक्ष जबकि **डॉ. ध्यानेन्द्र नारायण दूबे** सह अध्यक्ष होंगे। विषय विशषज्ञ के रूप में रामलखन सिंह यादव कालेज, औरंगाबाद, बिहार के इतिहास विभाग के एसो. प्रोफेसर **प्रो. विजय शंकर श्रीवास्तव** होंगे।

संगोष्ठी के **आयोजन** सचिव **सुबोध कुमार मिश्र** ने बताया कि वैदिक वांगमय में वर्णित ***"पुमान् पुमांस परिपातु विश्वतः, यांश्चपश्यामि यांश्च न तेशु मा सुमति कृधि, द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथ्वी शान्तिराय....., समानं मनः सहचित्तमेशाम्*** तथा ***माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याम'*** जैसी विश्व भावना को समेटे भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार एवं इस दिशा में चल रहे विचार विमर्श और हो रहे शोधों से अवगत होने की दृष्टि से महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ ने भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार विषयक दो दिवसीय राष्ट्री संगोष्ठी के आयोजन का जो निर्णय लिया हैं। यह संगोष्ठी भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को रेखांकित करने एवं विश्व में इसके प्रस

रण की प्राचीन तथा वर्तमान प्रासंगिकता को प्रस्तुत कर लोक–कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाली सिद्ध होगी।

संगोष्ठी में निम्न बिन्दुओ पर होगा विचार–विमर्श एवं मंथन
1. भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार।
2. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया और हिन्दू संस्कृति।
3. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया के हिन्दू सम्राट ।
4. विश्व में रामायण और महाभारत।

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

5. विश्व में संस्कृत भाषा एवं साहित्य का प्रसार।
6. थाईलैण्ड के राम नाम धारी नरेश।
7. कम्बोडिया का विशाल विष्णु मंदिर–अंकोरवाट ।
8. इंडोनेशिया, लाओस तथा वियतनाम में शैव धर्म।
9. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया के महाननरेश
10. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में जाति–व्यवस्था।
11. अफगानिस्तान में बौद्ध धर्म।
12 थाईलैण्ड का राजकीय धर्म–बौद्ध धर्म।
13. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया के बाद निकाला द्वारा कुत सामाजिक कल्याण के कार्य।
14. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में राजा के दैवीय सूकी उकारण।
15 विश्व में भारतीय धर्म और राजनीति।
16. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय सन तं का य
17 विश्व में हिन्दी एवं भोजपुरी।
18. दक्षिण एशियाई देशों के साथ भारत के अधिक ।
19. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया की भौगोलिक विशेषताए।
20 कम्बोडिया का देवराज और बुद्ध ।
21. विदेशी यात्रियों का भारत–वर्णन

(डॉ. राहुल मिश्रा)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकार